"चीर के जमीन को मैं उम्मीद बोता हूँ, मैं किसान हूँ, चैन से कहाँ सोता हूँ"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 20, अंक : 4 (अक्टूबर–दिसम्बर, 2025)

कुलपति संदेश

भारतीय कृषि अनेक दशकों से हमारी अर्थव्यवस्था का आधार रही है तथा वर्तमान में लगभग 150 करोड़ जनसंख्या को खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है। बदलते मौसम, पर्यावरण असंतुलन, दैवीय आपदा इत्यादि कारणों से वैज्ञानिकों के समक्ष कृषकों की आजीविका में सुधार लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। हरित क्रांति की जननी पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषकों की आय वृद्धि हेतु नवीनतम तकनीकियाँ यथा उन्नत प्रजातियाँ, जैविक खेती, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन, मौन पालन, स्थानीय उत्पादों का मूल्यवर्धन आदि का विकास कर कृषकों को उपलब्ध कराया जा रहा है। कृषकोपयोगी तकनीकें उत्तराखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों के कृषकों तक पहुँचायी जा रही हैं। कृषि के उत्तरोत्तर विकास हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों की 350 से भी अधिक प्रजातियों का विकास किया गया है। इनमें मुख्यतः धान्य फसलें, दलहन, तिलहन, मसाले, सब्जियाँ, औद्यानिकी इत्यादि हैं। पशुपालन के क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय निरन्तर नयी–नयी ऊँचाइयों को छू रहा है। यहाँ यह कहना उचित होगा कि विकसित तकनीकों की सार्थकता तभी है जब कृशक इन्हें सफलतापूर्वक अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकें। तकनीक हस्तान्तरण सम्बन्धी कार्य मुख्यतः कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के कंधों पर है जो निरन्तर सेवा–भाव के साथ अपनी भूमिका निभा रहे हैं। कृशकों के बीच निःस्वार्थ भाव और लगन से सेवा करने का ही परिणाम है कि कृषकगण, कृषि वैज्ञानिकों पर पूरा भरोसा रखते हैं। इसी क्रम में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" में आगामी त्रैमास के प्रमुख कृषि कार्यों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा चलाये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों, प्रशिक्षणों, प्रदर्शनों, सफलता की कहानियों इत्यादि को वर्तमान अंक में समाहित किया गया है। यहाँ यह भी सूचित करना समीचीन होगा कि विश्वविद्यालय द्वारा आगामी किसान मेला, मार्च 13–16, 2026 को आयोजित होना निश्चित हुआ है। मैं कृषक समुदाय से आग्रह करूँगा कि इस मेले में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, प्रसार कार्यकर्ताओं आदि के लिए उपयोगी साबित होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेषक प्रसार षिक्षा तथा डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय व उनकी टीम को बधाई देता हूँ।

(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

हर्ष का विषय है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा त्रैमासिक पत्रिका 'पंत प्रसार संदेश' का प्रकाशन किया जा रहा है। देश में कृषकों का अतीत से ही खेती–किसानी के प्रति अटूट सम्बन्ध रहा है। कृषकगण अपने परिवार का भरण–पोशण अनाज फसलें, सब्जियों एवं फलों के उत्पादन तथा पशुपालन आदि से करते हैं तथा इसके साथ–साथ अतिरिक्त कृषि उत्पादों का बाजार में विक्रय करके अपनी समस्त आर्थिक, सामाजिक आवश्यकताओं के साथ–साथ कृषि निवेशों का क्रय करते हैं। वैज्ञानिकों ने देश व किसान हित में कृषि की विभिन्न तकनीकों को विकसित करके उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि की है, जो अनुकरणीय है। कृषि विश्वविद्यालय एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद द्वारा जलवायु परिवर्तन के अनुरूप नई प्रजातियाँ विकसित करना, सीमित जल से बेहतर फसल प्रबन्धन के साथ–साथ जैव–उर्वरक एवं जैव–रसायन के प्रयोग आदि पर निरन्तर शोध किये जा रहे हैं। इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखित करना होगा कि खरपतवारों से फसलों को भारी क्षति होती है, जिनका समुचित प्रबन्धन किया जाना आवश्यक है। हमारे संस्थान द्वारा अलग–अलग फसलों के लिए खरपतवारों के नियंत्रण हेतु तकनीकें विकसित की गयी हैं। इन तकनीकों का प्रयोग कर कृषक भाई फसल उपज में वृद्धि कर सकते हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि खरपतवार सम्बन्धी किसी भी समस्या के समाधान हेतु संस्थान से सम्पर्क कर सकते हैं।

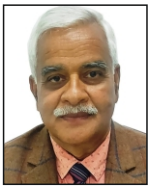

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अपने अनूठे समन्वित स्वरूप शिक्षा, शोध एवं प्रसार के लिए विख्यात है। मुझे यह ज्ञात है कि इस विश्वविद्यालय के अधीन विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक कृषकों को आधुनिक कृषि विधाओं से अवगत करा रहे है, जिसके फलस्वरूप कृषक प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के साथ–साथ राश्ट्र की सकल घरेलू उत्पाद में अभिवृद्धि कर नये–नये आयाम स्थापित कर रहे हैं। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं पूरे प्रकाशन टीम को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित सामग्री के अध्ययन से सभी पाठकों को लाभ मिलेगा।

(डा0 जे0एस0 मिश्र)
निदेशक, भा.कृ.अ.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

प्रसन्नता का विषय है कि निरन्तर बढ़ती जनसंख्या हेतु देश के पास पर्याप्त खाद्यान्न की उपलब्धता है तथा इस हेतु निश्चित रूप से कृषि वैज्ञानिक, विभागीय अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषकगण बधाई के पात्र हैं। आज के परिपेक्ष्य में खाद्य सुरक्षा, सुपोशण, पर्यावरण स्थिरता व लाभान्वित कृषि आजीविका को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीक को अपना कर किसान अपनी आय में पर्याप्त वृद्धि कर सकते हैं। विकसित तकनीक के क्षैतिज हस्तांतरण में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों का बहुत बड़ा योगदान होता है। सम्बन्धित वैज्ञानिकगण, कृषि विश्वविद्यालयों एवं अन्य शोध केन्द्रों द्वारा विकसित तकनीकों को क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप कृषकों तक ले जाकर तकनीकों का प्रचार–प्रसार करते हुए कृषकों की आजीविका सुधारने हेतु सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। साथियों, हमारा संस्थान कृषि ज्ञान निदेशालय, नई दिल्ली देश में ज्ञान आधारित कृषि विकास को बढ़ावा देने हेतु समर्पित है। निदेशालय द्वारा पत्रिका और पुस्तकों का प्रकाशन, मल्टी मीडिया आउटरीच, डिजिटल सामग्री निर्माण, प्रेस मीडिया समन्वयन आदि कार्य सम्पादित किया जाता है। किसान बन्धु, प्रसार अधिकारी इंगित विषयों पर जानकारी प्राप्त करने हेतु हमसे बेझिझक सम्पर्क कर सकते हैं। वर्तमान में अनेक कृषक स्वयं सहायता समूह, कृषक क्लब, कृषक मण्डल, एफ.पी.ओ. आदि द्वारा संगठित होकर कृषिकरण करते हुए अपने आजीविका में सुधार कर रहे हैं। साथ ही सरकार द्वारा कृषि विकास सम्बन्धी योजनाओं में अनुदान का लाभ लेकर भी कृषक अपनी खेती को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों में कार्यरत वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों को मैं बधाई देती हूँ कि वे अपने घर परिवार से दूर रहते हुए कृषकों की सेवा व उनके आर्थिकी सुधार हेतु तत्पर रहते है। मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि पंत विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि यह पत्रिका हित धारकों हेतु बहुत लाभकारी होगी।

(डा0 अनुराधा अग्रवाल)
परियोजना निदेशक, भा.कृ.अ.प.–कृषि ज्ञान प्रबन्ध निदेशालय, नई दिल्ली

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जनवरी–मार्च

जनवरी : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ : देर से बोयी गयी फसल में बुवाई के लगभग 25–30 दिन के अन्दर निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। संस्तुत खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग करें। फसल में जिंक की कमी अथवा पीला रतुआ के लक्षण दिखाई देने पर संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

तोरिया (लाही), पीली सरसों एवं राई : विलम्ब से बोयी गयी तोरिया एवं पीली सरसों की फसल पकने पर कटाई करें। राई में फूल व फलियां बनते समय सिंचाई करें। फसल में बालदार सूँड़ी व माहू कीट तथा झुलसा, सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। चना अथवा मसूर में माहू कीट लगने पर रोकथाम हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : पेड़ी एवं शरदकालीन गन्ने की कटाई करें। शरदकालीन गन्ने में निकले जल कल्लों (वाटर–शूट्स) को काट दें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ : खरपतवारों को निकाल लें। खरपतवार नियंत्रण हेतु संस्तुत खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग करें। वर्षा होने पर असिंचित गेहूँ में 1.2 कि.ग्रा. तथा सिंचित गेहूँ में सिंचाई के पश्चात् 2.0–2.5 कि.ग्रा. प्रति नाली की दर से यूरिया की टॉप–ड्रेसिंग करें।

मसूर एवं मटर : निराई–गुड़ाई कर फसल में उगे खरपतवारों को निकाल लें। पौध विगलन रोग आने पर संस्तुति अनुसार फफूँदनाशी रसायन का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही/घरिया), पीली सरसों एवं राई : इन फसलों में कीट अथवा रोगों का प्रकोप होने पर संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।

जनवरी : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

आलू : आलू की खुदाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसल की पत्तियों की कटाई का कार्य 15 जनवरी से पहले कर दें। पछेता झुलसा बीमारी के बचाव के लिए इन्डोफिल–45 का 0.2 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर : फसल की आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

मटर : बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें। सफेद चूर्णिल आसिता बीमारी से बचाव के लिए गंधक 03 कि.ग्रा. या ट्राईकोडर्मा का 02–03 छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी : तैयार फूल की कटाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मूली, गाजर, शलजम : तैयार जड़ों की खुदाई, सफाई कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल के लिए उत्तम जड़े उखाड़ें व 1/3 भाग काटकर 60x50 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

प्याज : तैयार क्यारियों में 20x10 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें। रोपाई सांयकाल करें एवं रोपाई के बाद हल्की सिंचाई करें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : घाटियों में आलू की बुवाई की व्यवस्था करें।

टमाटर : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजें। ग्रीष्मकालीन रोपाई के लिए पौध तैयार करें।

पालक, मैथी : इन फसलों की कटाई करें व गड्डियां बनाकर बाजार भेजें। अवांछित पौधों को निकाले तथा आवश्यकतानुसार निराई व सिंचाई करें।

जनवरी : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए छप्पर का प्रबन्ध करें। बाग व थालों की सफाई करने के बाद, थालों में गोबर की खाद व फास्फोरसधारी उर्वरकों का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग में गोबर की खाद व फास्फोरसधारी उर्वरक का प्रयोग करें। जनवरी माह में नीबू की कटाई–छंटाई करें।

अमरूद : फलों की चिड़ियों से रक्षा करें। पके फलों की तुड़ाई करके बाजार भेजें।

पपीता : बाग की सिंचाई करें। पेड़ पर फलों को टाट से ढक दें। फास्फोरस व पोटाशधारी उर्वरकों को प्रयोग कर गुड़ाई करें।

लीची : छोटे पौधों का पाले से बचाव करें। फलदार पौधों में गोबर की खाद व फास्फोरसधारी उर्वरकों को थाले में प्रयोग करके मिट्टी में मिला दें।

कटहल : फलदार वृक्षों में गोबर की खाद तथा फास्फोरसधारी उर्वरक का प्रयोग करें। छोटे पौधों का पाले से बचाव करें।

जनवरी : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब व नाशपाती : नए बाग लगाने हेतु खोदे गए गड्ढ़ों की भराई माह के प्रथम सप्ताह तक पूरा कर लें। पौध रोपण के बाद उनकी सधाई हेतु कटाई–छंटाई करें। कटे भाग पर चौबटिया लेप लगा दें।

आड़ू, खुबानी, आलू बुखारा व बादाम : नए बाग लगाने हेतु गड्ढ़ों की भराई का कार्य पूर्ण कर लें। बाग में गोबर की खाद व फास्फोरस उर्वरक का प्रयोग करें। बाग के पेड़ों की काट–छांट प्रारम्भ कर दें। तराई, भाबर व मैदानी क्षेत्रों में आड़ू व आलूबुखारा की कम ठंड चाहने वाली किस्मों की रोपाई का कार्य पूर्ण करें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : समय पर बोयी गयी फसल में पुष्पावस्था में सिंचाई करें। विलम्ब से बोयी गयी फसल में खरपतवार नियंत्रण करें। फसल में झुलसा व गेरूई रोग एवं माहू कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

राई : फसल में दाना बनने की अवस्था पर सिंचाई करें। सफेद गेरूई, झुलसा अथवा तुलासिता रोग आने पर संस्तुति के अनुसार फफूँदनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों में फूल आने से पूर्व आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। चने में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : सिंचित दशा में बोयी गयी गेहूँ की फसल में वर्षा न होने पर पुष्पन अवस्था पर सिंचाई करें। उपराऊँ/असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव लाभदायक रहेगा।

तोरिया, पीली सरसों एवं राई : तिलहनों में माहू कीट अथवा रोगों का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार नियंत्रण करें।

मसूर एवं मटर : फलियों में दाना बनते समय पानी की उपलब्धतानुसार सिंचाई करें। मसूर में माहू कीट एवं मटर में फली छेदक व पत्ती सुरंगक कीट का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

आलू : पिछेती फसल में 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल–45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर : ग्रीष्मकालीन फसल की रोपाई यदि अभी तक नहीं कर पायें हैं तो शीघ्र ही 60ग45 सेमी. की दूरी पर करें। आखिरी जुताई पर 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 80 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से डालें।

बैंगन : रोपाई हेतु भूमि की तैयारी के समय 200–300 कुन्तल सड़ी हुई गोबर की खाद, 10 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 80 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से दें। रोपाई 60ग45 सेमी. की दूरी पर करें।

मटर : कीट एवं रोगग्रस्त फलियों को बाजार भेजने से पूर्व छांट दें।

बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें तथा चूर्णी फंफूदी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

प्याज, लहसुन : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई व गुड़ाई करें व 50 कि.ग्रा. यूरिया की खड़ी मात्रा फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की है तो अविलम्ब खेत की तैयारी करें व 20ग10 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : आलू की अगेती बुवाई हेतु खेत की तैयारी के समय उर्वरक 150 : 100 : 100 की दर से डालें। बीज हेतु बड़ा आलू काटें एवं कटा टुकड़ा 30–50 ग्राम का तथा दो या तीन आंखों वाला होना चाहिए। आलू की बुवाई 45–60 सेमी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में व 5–7 सेमी. गहरी की जाये।

टमाटर : घाटियों में टमाटर की बुवाई 15–20 सेमी. ऊंची उठी हुई क्यारियों में 10–15 सेमी. पर बनी पंक्तियों में करें। तापक्रम बहुत कम होने की दशा में 15–20 सेमी. मोटी सूखी घास व पत्तों की अवरोध पर्त से पौधालय को ढक दें।

शिमला मिर्च : घाटियों में तैयार पौधालय में 1–1.5 कि.ग्रा. बीज/है. की दर से इसकी बुवाई करें।

खीरावर्गीय : खीरावर्गीय सब्जियों की बुवाई हेतु 1.5ग1.0 मीटर की दूरी पर थाले बनायें। प्रत्येक थाले में 10–15 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 20–25 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 15 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश मिला दें व 05–06 बीज प्रति थाला बोयें।

फरवरी : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : चूर्णित आसिता, श्यामवर्ण और छोटी पत्ती रोग के लिए संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। इसी तरह भुनगा कीट की रोकथाम हेतु भी संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

केला : पौधों की सूखी पत्तियों को निकाल कर बाग की 15 दिन के अन्तर पर दो सिंचाई करें। इस माह के अंत तक पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें।

नीबूवर्गीय फल : मूलवृंत तैयार करने हेतु पौधशाला में बीजों की बुवाई करें। पौधशाला में कली बाँधे। फलदार बागों में पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई कर दें।

पपीता : पिछले सीजन में लगाए गए पौधों में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करके गुड़ाई व एक सिंचाई करें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

लीची : फलदार वृक्षों में पोटाश और नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके थालों में गुड़ाई कर दें। टहनियों पर छाल खाने वाली इल्ली के मल को साफ कर दें।

फरवरी : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब व नाशपाती : ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र में नए बाग रोपाई का कार्य इस माह के मध्य तक कर दें। पौधों की सधाई का कार्य पूर्ण करें। पोटाश व नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करके थालों की गुड़ाई करें व पलवार से ढक दें।

आड़ू व बादाम : पर्णकुंचन की रोकथाम के लिए चूना गंधक (1:15) के घोल का छिड़काव करें।

अखरोट व अन्य : पिछले माह यदि उर्वरकों का प्रयोग न किया गया हो तो इस माह कर दें। थालों में पलवार बिछा दें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। कंडुवा रोग से ग्रसित गेहूँ की बालियों को सावधानीपूर्वक लिफाफे से ढ़ककर निकाल लें तथा मिट्टी में दबाकर नष्ट कर दें। माहू के नियंत्रण हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

राई : तैयार फसल की कटाई व मड़ाई कर लें तथा दानों को सुखाकर भण्डारित कर लें।

चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर में फली बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। चना में फली छेदक कीट की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का प्रयोग करें। उर्द की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में तथा मूंग की द्वितीय पखवाड़े में कर लें।

गन्ना : नौलख गन्ने की कटाई माह के अन्त तक कर लें। फरवरी माह में बोयी गयी फसल में सिंचाई करें तथा 3–4 दिन बाद गुड़ाई कर खरपतवार भी निकाल लें। बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई माह के मध्य तक पूरी कर लें। गन्ने की दो पंक्तियों के बीच में अन्तःफसल के रूप में उर्द, मूंग अथवा लोबिया की एक लाईन की बुवाई की जा सकती है। शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा संस्तुति अनुसार यूरिया की टॉप–ड्रेसिंग करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल की पुष्पन अवस्था पर सिंचाई करें। असिंचित फसल में पुष्पन अवस्था से पूर्व यूरिया के 2 प्रतिशत घोल (20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी) का पर्णीय छिड़काव करना लाभप्रद रहेगा। फसल में झुलसा अथवा गेरूई रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

तोरिया, पीली सरसों एवं राई : फसल पकने पर कटाई कर लें। मध्यम ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में बोयी गयी राई की फसल में रोग अथवा कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

मटर एवं मसूर : फली छेदक, पत्ती सुरंगक अथवा माहू कीट की रोकथाम हेतु संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : माह के द्वितीय पखवाड़े में चेतकी धान (असिंचित) की बुवाई शुरू करें। अधिक उत्पादन हेतु प्रजाति का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

आलू : आलू की खुदाई का काम 15 मार्च तक अवश्य पूरा करें। देर से खुदाई करने पर आलू सड़ना शुरू हो जाता है। हरे, छोटे व कटे आलू को निकालकर शेष कोया तो बाजार भेजें या शीत भण्डार में रखने की व्यवस्था करें।

टमाटर : जनवरी–फरवरी की फसल में 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल–45 का छिड़काव करें। ग्रीष्मकालीन टमाटर में फलछेदक कीट का काफी आक्रमण होता है। अतः इसके बचाव के लिए पुष्पावस्था में संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

बैंगन : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें एवं 50 कि.ग्रा. यूरिया/है. की दर से खड़ी फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की है तो 60–45 सेमी. की दूरी पर रोपाई व सिंचाई करें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी, मूली, गाजर व शलजम : तैयार गोभी व जड़ों को बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसलों में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें।

प्याज व लहसुन : फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें। बीमारी के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल–45 का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

मिर्च : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। यूरिया 50 कि.ग्रा./है. की दर से खड़ी फसल में डालें। यदि अभी तक रोपाई नहीं की गई है तो 50ग50 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : घाटियों में झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल–45 का घोल बनाकर छिड़काव करें, सिंचाई करें व 50 कि.ग्रा. यूरिया/है. की दर से खड़ी फसल में डालें। खेत की तैयारी के समय 200 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद डाले तथा उपलब्धतानुसार आखिरी जुताई पर रासायनिक उर्वरक का भी प्रयोग करें तथा 60 सेमी. की दूरी पर मेड़ बनाकर इन पर 15 सेमी. की दूरी पर बीज बोयें।

टमाटर : पूर्व में रोपी गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी के बचाव के लिए 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल–45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

पालक/धनियां, मैथी : बुवाई पूर्व तैयार खेत में 100 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद तथा 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 60 कि. ग्रा. पोटाश/है. की दर से डाले, 30 सेमी. की दूरी पर कतारें बनायें व इनमें बीज की बुवाई करें।

भिण्डी/लोबिया : बुवाई पूर्व 100 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद, 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से डाले। 30 सेमी. की दूरी पर कतारें बनायें व बीज की बुवाई करें।

खीरावर्गीय फलियां : बुवाई हेतु 150 सेमी. की दूरी पर नालियां बनायें। उनमें 100 सेमी. की दूरी पर थालें बनायें। प्रत्येक थाले में 10 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 10 ग्राम यूरिया, 25 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 10 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश डालकर बीज की बुवाई करें।

मार्च : मैदानी क्षेत्र–फल

केला : खरपतवार को निकालकर गुड़ाई करें। अवांछित पुत्तियों को निकाल दें। माहू की रोकथाम हेतु 0.2 प्रतिशत मैटासिस्टाक्स के घोल का छिड़काव करें। बाग की सिंचाई करें।

नीबूवर्गीय फल : कैंकर रोग की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने हेतु बीजों की बुवाई करें। पिछले मौसम में कलिका चढ़ाए गए पौधों के मूलवृंत से उगे हुए कल्लों को निकाल दें।

पपीता : नए बाग की रोपाई करें। बाग में थालों की सफाई करें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

कटहल, फालसा व करौंदा : बाग की सफाई करें। यदि नमी की कमी हो तो एक सिंचाई करें। बाग में ब्लाइटाक्स–50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

मार्च : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब व नाशपाती : बीजू मूलवृत्त पर भेंट कलम बांधने का कार्य समाप्त करें। बाग में पलवार बिछाएं। नाशपाती में नाइट्रोजन व पोटाशधारी उर्वरकों का प्रयोग करें। चूर्णिल आसिता की रोकथाम हेतु सल्फेक्स (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा व बादाम : जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) व बोरेक्स (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें। गोंदार्ति रोग की रोकथाम हेतु 0.2 प्रतिशत ब्लाइटाक्स–50 के घोल का छिड़काव करें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 41.60 है. क्षेत्रफल पर 155 प्रदर्शन एवं परीक्षणों का आयोजित हुए हैं। इसी प्रकार कुल 14 प्रशिक्षण आयोजित करते हुए 290 कृषक, युवा कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।
- रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 09 किसान गोश्ठियों में वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये, जिसमें 177 कृषकों ने भाग लिया। वैज्ञानिकों द्वारा 26 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर उनके कृषिगत समस्याओं का समाधान किया गया।
- केन्द्र द्वारा स्वच्छता अभियान तथा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र परिसर एवं विभिन्न गांवों व शैक्षिक संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

- किसान दिवस कार्यक्रम दिनांक 23.12.2025 में विकसित कृषि सम्बन्धी तकनीकी जानकारियां प्रदान की गयी, जिसमें 100 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत माननीय प्रधानमंत्री ने 19.11.2025 को 9 करोड़ किसानों को ₹ 18,000 करोड़ से अधिक राशि जारी की। इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण कृषकों को दिखाया गया। कार्यक्रम के दौरान भारत सरकार द्वारा कृषकों के लिए चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी भी दी गयी।

पी.एम. किसान सम्मान निधि कार्यक्रम

- कृषि चौपाल कार्यक्रम दिनांक 08.11.2025 का लाईव टेलीकास्ट किया गया, जिसमें अनेक कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- कक्षा 9 एवं 10 के 75 छात्रों का केन्द्र पर शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को कृषि एवं पशुपालन की जानकारी एवं विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण कराया गया।
- प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना के अन्तर्गत दिनांक 11.10.2025 को केन्द्र पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें कृषकों को प्रधानमंत्री के सम्भाषण का सीधा प्रसारण दिखाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत प्याज NHRDF-Red-4 पर 0.1 हे0 क्षेत्रफल में 15 प्रदर्शन, मूसर प्रजाति पी.एल.–11 का 3.0 हे0 में 24 प्रदर्शन, सरसों की 10.00 हे0 में 50 प्रदर्शन, गेहूँ वी.एल.–967 व डी.बी.डब्लू.–303 के 14.0 हे0 में 65 प्रदर्शन लगाये गये हैं। इसके अतिरिक्त पशु पालन के अन्तर्गत 56 प्रदर्शन व गृह विज्ञान के अन्तर्गत 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन लगाये गये। सामुदायिक विज्ञान के अन्तर्गत 01 ऑन फार्म ट्रायल लगाया गया।
- केन्द्र द्वारा उद्यान विज्ञान, पशु पालन, गृह विज्ञान व सस्य विज्ञान के अन्तर्गत कुल 47 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 920 कृषक/कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- विकसित तकनीक के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु 02 प्रक्षेत्र दिवस एवं 09 गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें 687 कृषकों ने प्रतिभाग किया। इसी क्रम में, कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन कर विकसित तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम दिनांक 02 से 31 अक्टूबर 2025 व 16 से 31 दिसम्बर 2025 तक विभिन्न अंगीकृत ग्रामों में आयोजित हुआ। दिनांक 23.12.2025 को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस को किसान दिवस के रूप में मनाया गया।
- शेरे कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, जम्मू में आई.सी.ए.आर.–अटारी, लुधियाना द्वारा दिनांक 22–24 दिसम्बर, 2025 तक कृषि विज्ञान केन्द्रों का वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र को उत्तराखण्ड का सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र से पुरस्कृत किया गया।

कार्यशाला में सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र का पुरस्कार

- कृषकों की आन लाईन समस्या समाधान (188), वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण (163) व विभिन्न विषयों पर व्याख्यान (13) देकर कुल 1121 किसानों को लाभान्वित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत, अदरक में 0.2 है. में 4, सब्जी मटर में 9 तथा लहसुन में 0.09 है. में 9 प्रदर्शन लगाये गए। गोवंश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु उन्नत प्रजाति के मल्टीकट ज्वार पर 10 परीक्षण लगाये गये।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत अदरक में 0.8 है. में 40 प्रदर्शन, गेहूँ हाइब्रिड में 4 है. में 10 प्रदर्शन, खरपतवारनाशी के प्रयोग में 4 है. में 10 प्रदर्शन, क्लस्टर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत गेहूँ में 10 है. में 25, एवं तिलहन फसलों में 20 है. में 36 प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। इसी प्रकार, गृह विज्ञान में 25 न्यूट्री गार्डन प्रदर्शन आयोजित हुए हैं।
- प्रक्षेत्र पर एक मत्स्य पालन इकाई स्थापित की गयी है, जो किसानों को अपनी मौजूदा कृषि प्रणालियों में मत्स्य पालन को एकीकृत करके आय बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।
- केन्द्र द्वारा ग्रामीण उद्यम वेग वृद्धि परियोजना (ग्रामोत्थान) के अंतर्गत "चारा एवं साइलेज उत्पादन" विषय पर दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये। दिनांकः 18.11.2025 को सेवारत कर्मियों/आँगनबाड़ी कार्यकर्ती, आँगनबाड़ी केन्द्र, कुन्जा, बाल विकास परियोजना, देहरादून के साथ 'गर्भवती महिला एवं धात्री माता हेतु स्थानीय भोज्य पदार्थ द्वारा कम कीमत पर संतुलित आहार' के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। कैम्पा–एक्सटेंशन–केवीके नेटवर्किंग गतिविधियों के अंतर्गत 27 से 29 अक्टूबर, 2025 तक औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

- केन्द्र के सहयोग से पौध विविधता पंजीकरण के अंतर्गत किसानों ने भारत सरकार के पौध विविधता संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण (पीपीवी एवं एफआरए) के अंतर्गत अपनी 21 पौध किस्मों का सफल पंजीकरण कराया है।
- भा.कृ.अ.प.– राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संस्थान ब्यूरो, करनाल द्वारा वित्त पोषित नेटवर्क परियोजना (उत्तराखंड के पशु आनुवंशिक संसाधनों का चिन्हिकरण एवं संरक्षण) के अंतर्गत केन्द्र द्वारा देसी नस्ल पर जागरुकता एवं कृषक गोष्ठियों का आयोजन किया गया।
- हैंडलूम सप्ताह के अंतर्गत महिलाओं तथा ग्रामीण युवाओं हेतु दिनांक 02–17 दिसम्बर, 2025 तक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हंस फाउंडेशन के सहयोग से विकलांगता और उसके प्रबंधन के बारे में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा सस्य विज्ञान, मृदा विज्ञान, कृषि अभियंत्रण, पशुपालन, उद्यान विज्ञान आदि पर कुल 05 आन फार्म ट्रायल, 07 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित हुए, जिससे 170 किसानों को लाभ हुआ। क्लस्टर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत मसूर के 1.0 तथा सरसों के 10.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल में प्रदर्शन लगाये गये हैं। इस अवधि में 31 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिससे 640 किसान लाभान्वित हुए। केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा 22 गोष्ठियों में भी प्रतिभाग किया गया।
- राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत कृषि सखी हेतु 28 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। केन्द्र द्वारा दो प्रदर्शनी, सात रेडियो टाक, आठ प्रेस रिलीज व तीन कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया।

कृषि सखी प्रशिक्षण कार्यक्रम

- विकसित भारतः गारंटी फॉर रोजगार एण्ड आजीविका मिशन (ग्रामीण) कार्यक्रम दिनांक 23 दिसंबर 2025 को जागरूकता अभियान चलाते हुए कृषकों को विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। पशुपालन विभाग के सहयोग से आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की आजीविका का एक नवाचारी परियोजना के अंतर्गत दो पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया।
- विश्व मृदा दिवस दिनांक 5 दिसंबर 2025 को कृषि विभाग के सहयोग से मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन विषयक गोश्ठी का आयोजन किया गया।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत माननीय प्रधानमंत्री ने 19.11.2025 को 9 करोड़ किसानों को ₹ 18,000 करोड़ से अधिक राशि जारी की। इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण अन्नदाताओं को दिखाया गया।
- केन्द्र के तत्वाधान में पराली अवशेश प्रबन्धन विषय पर 30 अक्टूबर, 2025 को जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम द्वारा किसानों को धान की कटाई के पश्चात् फसल अवशेशों के वैज्ञानिक एवं पर्यावरण अनुकूल प्रबन्धन के प्रति जागरूक किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ (एचडी–2967, वी0एल0–907) का 10 हैक्टेयर में 20 प्रदर्शन, मसूर (वी0एल0–9) का 2.0 है. में 5 प्रदर्शन एवं तोरिया (पी0टी0–508, पन्त श्वेता) का 40 हैक्टेयर में 150 प्रदर्शन लगाये गये। पोषण वाटिका के अन्तर्गत रबी में लगाये जाने वाले सब्जी बीज एवं पौधों के 50 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये। प्लांक्टन बूस्टर का प्रयोग कर तालाब की प्राकृतिक उत्पादकता में वृद्धि द्वारा मत्स्य उत्पादन विषयक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
- प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत गन्ना में खरपतवार नियंत्रण हेतु विभिन्न खरपतवार नाशियों का 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर मूल्यॉकन किया गया। कृषि कार्यों में उपयोग किये जाने वाले कृषि यंत्र लौंग हैन्डिल स्प्रिंग ब्रेक के प्रयोग द्वारा महिलाओं में श्रम एवं समय की बचत के लिये 10 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृषक एवं महिला कृषकों के लिये कुल 18 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आर्या परियोजना के अन्तर्गत पॉच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा 40 कृषकों को कुक्कुट पालन एवं केन्द्र पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा 40 महिलाओं को शोभाकारी मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
- अन्य कार्यक्रम के अन्तर्गत 02 पशु स्वास्थ्य शिविर, गोट वैली योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषकों को बकरी पालन विषयक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। राश्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अन्तर्गत 4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं 2 जागरूकता अभियान के आयोजन द्वारा 164 कृषकों

किसान सम्मान निधि कार्यक्रम

को लाभान्वित किया गया। प्रधान मंत्री धन धान्य कृषि योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 304 कृषकों ने प्रतिभाग किया। दिनांक 15.10.2025 को महिला कृषक दिवस एवं दिनांक 31.10.2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस आयोजित किया गया। दिनांक 16.12.2025 से 31.12.2025 तक स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 23.12.2025 को किसान दिवस कार्यक्रम का आयोजन कर 146 कृषकों को नवीनतम कृषि गतिविधियों के बारे में बताया गया।

- दो कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम तथा महिला स्वयं सहायता समूह की 11 मासिक बैठको के अन्तर्गत सदस्याओं को आयोपार्जन के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा पारम्परिक फसलों, पर्वतीय क्षेत्रों में फलों की बागवानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जियों की पैदावार उपयुक्त तकनीकों पर सामुदायिक रेडियो जनवाणी पन्तनगर एवं आकाशवाणी देहरादून में वार्ता दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा कृषकों हेतु 23 प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओं हेतु 05 रोजगारपरक प्रशिक्षण एवं वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 02 प्रशिक्षण आयोजित किये गये। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत धान–4.20 है0, सोयाबीन–3.0 है0, गहत–2.0 है0, मंडुआ–10.0 है0, कीवी–0.5 है0, आम–0.5 है0 व लौकी, कद्दू व खीरा के 0.2 है0 में प्रदर्शन में लगाये गये है।
- उत्तराखण्ड़ स्थापना रजत जयन्ती कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनाँक 05 अक्टूबर, 2025 को महिला सशक्तिकरण गोश्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में माननीय श्री भगत सिंह कोश्यारी जी, पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र एवम् पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड डॉ0 मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, डॉ0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, श्री विनोद गिरि गोस्वामी, जिलाधिकारी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड रजत जयन्ती कार्यक्रम

- केन्द्र पर दिनाँक 11 अक्टूबर, 2025 को प्रधानमंत्री धन–धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का शुभारंभ किया गया। केन्द्र पर इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कृषकों को दिखाया गया। स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम दिनाँक 02 से 31 अक्टूबर, 2025, राष्ट्रीय एकता दिवस दिनाँक 31 अक्टूबर, 2025, सतर्कता जागरूकता सप्ताह दिनाँक 27 अक्टूबर से 02 नवंबर, 2025, संविधान दिवस दिनाँक 26 नवंबर, 2025, स्वच्छता ही सेवा अभियान–2025 कार्यक्रम दिनाँक 16 से 31 दिसम्बर 2025, किसान सम्मान दिवस व विकसित भारत : गारंटी ऑफ रोजगार एण्ड आजीविका मिशन ग्रामीण कार्यक्रम दिनाँक 23 दिसम्बर, 2025 को आयोजित किया गया।
- विशेषज्ञों द्वारा दिनाँक 24 दिसम्बर, 2025 को उद्यान विभाग द्वारा आयोजित माल्टा महोत्सव, दिनाँक 29 दिसम्बर, 2025 को किसान दिवस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। विशेषज्ञों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर 62 भ्रमण कर 1090 कृषकों को कृषि आधारित तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। विशेषज्ञों द्वारा एक रेडियो वार्ता तथा 05 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति की सब्जियों जैसे पत्तागोभी, ब्रोकली, प्याज, फूलगोभी, रोजमेरी, स्ट्रॉबेरी इत्यादि के लगभग 78000 पौधें कृषकों/स्थानीय नागरिकों को विक्रय किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- वैज्ञानिकों द्वारा कुल 18 प्रशिक्षण कार्यक्रम, 06 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन तथा 05 अनुकरणीय परीक्षण संचालित किये गये हैं।
- केन्द्र के क्रॉप कैफेटेरिया में पॉलीहाउस में पत्तागोभी– वरुण, कृष्णा, फूलगोभी–न्यूजीस्नोवाइट, मेघा, गिरिजा, लहसुन– एग्रो फाउण्ड पार्वती, प्याज– एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, वी.एल प्याज 3, राई– भरसार केदार राई तथा वी.एल. राई, मूली– स्कारलेट ग्लोब, गेहूं– वी.एल.–953, यू.पी.–2903, यू.पी.–2855, यू.पी. –2865, प्रजातियाँ लगाई गयी हैं, जो कृषकों हेतु आकर्षण के केन्द्र हैं।
- यूकॉस्ट द्वारा पीएम श्री नवोदय विद्यालय रुद्रप्रयाग में आयोजित दो दिवसीय सीमान्त बाल विज्ञान कांग्रेस में मुख्यमंत्री, श्री पुश्कर सिंह धामी जी की उपस्थिति में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग कर बच्चों को कृषि की विभिन्न विधाओं की जानकारी दी गयी।

बाल विकास संगोष्ठी में केन्द्र की सहभागिता

- मशरूम प्रदर्शन इकाई में ढिंगरी मशरूम उत्पादन तथा किसानों को उन्नत मशरूम उत्पादन विषयक प्रशिक्षण दिया गया। मधुमक्खी पालन इकाई में ऐपिस सिराना इण्डिका प्रजाति का पालन व प्रगतिशील कृषकों को आधुनिक मौन पालन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मूल्य संवर्धन के अन्तर्गत माल्टा तथा गलगल का स्कवैश व मंडुवे तथा चौलाई के बिस्किट एवं केक बनाने का प्रशिक्षण युवा कृषकों को दिया गया।
- केन्द्र द्वारा 08 नवम्बर को भारत सरकार द्वारा प्रसारित ई चौपाल का प्रसारण, 19 नवम्बर को पीएम किसान सम्मान निधि की 21वी किश्त मुक्त किये जाने का सीधा प्रसारण किसानों को दिखाया गया। वन्दे मातरम की 150वी वर्षगांठ पर वैज्ञानिकों द्वारा ग्रामीणों को वन्दे मातरम के प्रति जागरुक किया गया। किसान दिवस 23 दिसम्बर के अवसर पर केन्द्र पर तथा 29 दिसम्बर को जनपद के अन्य क्षेत्रों में गोष्ठी आयोजित की गयी। केन्द्र द्वारा 16–31 दिसम्बर तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन करते हुए ग्रामीणों व किसानों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत धान में पादप सुरक्षा, मादा पशुओं (15–20 वर्ष) के पोषण स्थिति में सुधार हेतु पोशक तत्वों से भरपूर मिश्रण का मूल्यांकन, तालाब के पर्यावरण को स्वस्थ बनाए रखने हेतु प्रोबायोटिक पूरक का मूल्यांकन, पंगेसियस मछली प्रजातियों की वृद्धि, उत्पादन और जीवित रहने की दर का मूल्यांकन एवं गोबर संग्राहक इत्यादि के परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत भिण्डी (पूसा भिण्डी–5), कद्दूवर्गीय फसलों में फल मक्खी प्रबंधन में जाल का प्रभाव, मछली की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक उत्पादकता में वृद्धि, यकृत बढ़ाने वाले पदार्थ के माध्यम से मछली के भोजन के रूपांतरण अनुपात को बढ़ाना, विटामिन सप्लीमेंट के माध्यम से मांसपेशियों के विकास में सुधार, ऑक्सीजन की कमी के कारण उच्च मृत्यु दर की समस्या, पोशण वटिका एवं जय गोपाल वर्मी कम्पोस्ट द्वारा उत्पादन में वृद्धि एवं धान में तना छेदक नियंत्रण इत्यादि विषयक कुल 21 है. में प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 12 प्रशिक्षण आयोजित कर लगभग 240 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।
- अन्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत पी.एम. धन धान्य कृषि योजना एवं

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन गोष्ठी, दिनांक 11.10.2025 को खटीमा में आयोजित किसान मेला, दिनांक 03.12.2025 में स्टाल एवं सहभागिता, किसान सम्मान दिवस व विकसित भारत : गारंटी ऑफ रोजगार एण्ड आजीविका मिशन ग्रामीण कार्यक्रम दिनाँक 23.12.2025 को आयोजित किया गया।

- स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम दिनांक 02.10.2025, जनजातीय गौरव दिवस दिनांक 01–15 नवम्बर, 2025 एवं वन्दे मातरम की 150वी वर्षगांठ पर ग्रामीणों को वन्दे मातरम के प्रति जागरुक किया गया। संविधान दिवस दिनांक 26.11.2025, राष्ट्रीय एकता दिवस दिनांक 31.11.2025, कृषक सम्मान निधि कार्यक्रम, उत्तराखण्ड स्थापना दिवस कार्यक्रम दिनांक 07.11.2025 इत्यादि के अवसर पर भी कृषकों व उपस्थित जनसमूह को जागरूक किया गया।

जन जातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा 2025 कार्यक्रम का आयोजन

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा 118वाँ अखिल भारतीय किसान मेला का आयोजन अक्टूबर 10–13, 2025 को किया गया। उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि, महामहिम राज्यपाल, उत्तराखण्ड, लेटिनेंट जनरल गुरमीत सिंह जी, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (से.नि.) ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने विभिन्न शोध केन्द्रों और कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से कृषकोपयोगी शोध एवं प्रसार में सतत् प्रयत्नशील है। विशेष रूप से विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के बाद से अपने प्राथमिकताओं में आवश्यकतानुरूप बदलाव लाते हुए पर्वतीय क्षेत्र के विकास हेतु शोध एवं प्रसार कार्यक्रम संचालित कर रही है। ये केन्द्र प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अन्य प्रसार कार्यक्रमों द्वारा अनेकों कृषकों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने एवं उनकी आय वृद्धि में निरन्तर महती भूमिका निभा रही है। किसान मेले के तृतीय दिवस मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री पुष्कर सिंह धामी जी पधारे और आपने कहा किसान मेला एक ऐसा मंच होता है जहाँ वैज्ञानिक, विभागीय अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता, स्वयं सहायता समूह, एफ.पी.ओ., किसान एवं उद्यमी एक ही स्थान पर अपनी कृषि सम्बन्धी सभी नवीनतम तकनीकों का आदान–प्रदान करते हैं। मुझे विश्वास है कि यह मेला किसानों के लिए लाभकारी होगा। समापन अवसर पर कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य शोध करना और शोध से उत्पन्न तकनीकों को किसान भाईयों, उद्यमियों, स्वयं सेवी संस्थाओं और कृषि से जुड़े फर्मों तक पहुंचाना है। आपने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे नित नवीनतम शोध करें और शोधों का परिणाम कृषकों तक पहुंचे, यह भी अति महत्वपूर्ण है।

किसान मेले का उद्घाटन करते मा. राज्यपाल

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय प्रसंस्कृत दुग्ध उत्पादों से आर्थिक सशक्तिकरण, ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग एवं मौन पालनः स्वरोजगार का सशक्त माध्यम सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में पशुपालन, कृषि, उद्यान एवं सहकारी विभाग के अधिकारी, आतमा के अधिकारी, मधुमक्खी पालक एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 95 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

बकरी पालन इकाई का भ्रमण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा जुलाई–सितम्बर, 2025 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	जनवरी 07–10, 2026
2.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जनवरी 19–22, 2026
3.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	फरवरी 04–07, 2026
4.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 02–04, 2026

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

भ्रमण पर आये 248 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं विभिन्न सब्जियों के बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 52 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

कृषक प्रदर्शन इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट कृषकों को प्रति इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर गोभीवर्गीय सब्जियाँ, चुकन्दर, पालक, मूली, मैथी, ब्रोकली, धनिया, प्याज की नर्सरी इत्यादि के प्रदर्शन संचालित हैं।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 20 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 755 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय कृषि विविधिकरण, पशुपालन प्रबन्धन, जैविक खेती, सब्जी उत्पादन, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, गेहूँ उत्पादन पर चर्चा, कृषि की नवीनतम तकनीक इत्यादि से सम्बन्धित थे। इसके अतिरिक्त परीविक्षाधीन डिप्टी कलैक्टरों का कृषि विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण भी कराया गया।

'डेसी' कोर्स–समापन सहारोह

डिप्लोमा कोर्स 'डेसी' टी.पी. संख्या–2731 का समापन समारोह 30 अक्टूबर, 2025 को आयोजित हुआ। इस कोर्स में 39 प्रतिभागियों को डिग्री प्रदान की गयी। इस अवसर पर डा0 मनमोहन सिंह चौहान,कुलपति ने डिग्रीधारकों से कहा कि आप सभी से यह अपेक्षा होगी कि कृषक समुदाय को बेहतरी से सेवा प्रदान करेंगें। रसायनों के संतुलित प्रयोग हेतु कृषकों को प्रोत्साहित करेंगें।

सफलता की कहानी :

वर्मी कम्पोस्टिंग से उद्यमिता की ओर बढ़ते कदम

श्री विशाल मंडल, ग्राम–दिनेशपुर, विकास खण्ड–गदरपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर के रहने वाले 28 वर्षीय प्रगतिशील कृषक हैं। बचपन से ही उनके अन्दर कुछ अलग करने की चाह थी आपने बी.टेक एवं एम.बी.ए. की शिक्षा ग्रहण की है। आप अपने क्षेत्र में बचपन से ही देखते थे कि कृषि में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशी रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग होता था। परिणाम स्वरूप मृदा का स्वास्थ्य, उत्पाद व पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। इसको देखते हुए आप कृषि विशेषकर जैविक कृषि के क्षेत्र में काम करना चाहते थे। आपका मानना है कि स्वस्थ जीवन का आधार कृषि है। इसी परिकल्पना को साकार करने के लिए केंचुआ खाद उद्यम प्रारम्भ किया। विभिन्न विभागों से समन्वयन, प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी संकलित करते हुए वर्ष 2020 में ''शारदाकांत आर्गेनिक प्रोडक्ट्स'' की नींव रखी। आज आपकी यूनिट केवल उत्तराखण्ड में ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न राज्यों में भी केचुंआ खाद का एक भरोसेमंद ब्रांड बन चुका है। समय–समय पर समेटी पंतनगर व अन्य विभागों के तकनीकी सहयोग से वर्ष दर वर्ष उत्पादन में वृद्धि करते गये। आपने कृषि के विभिन्न अन्य उद्यम जैसे पशुपालन, बकरी पालन, बागवानी, मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन के क्षेत्रों में भी कार्य करते हुए अपने प्रक्षेत्र को समन्वित कृषि प्रणाली का आदर्श नमूना बनाया। पंतनगर से सीखे ज्ञान से आपने वैज्ञानिक विधि से उद्यम बढ़ाने, वर्मी कम्पोस्ट और जैविक खाद के उत्पादन में गुणवत्ता सुधारने और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में विशेष मदद की। आप 500 वर्ग मीटर पॉलीहाउस में जरबेरा उगा कर पुश्प उत्पादन में भी हाथ आजमा रहे हैं। वर्तमान में आपकी वार्षिक आय लगभग रू. 5.00 लाख है जबकि पूर्व में आमदनी मुश्किल से रू. 20,000 होती थी। युवा पीढ़ी के लिए आपका संदेश है कि दृढ़ इच्छा, शिक्षा, प्रशिक्षण, ये तीन चीजें मिल जायें तो कोई भी व्यक्ति सफल हो सकता है। आप यह भी कहना नहीं भूलते कि ''गांव की जमीन में सिर्फ फसल ही नहीं अपितु भविश्य भी उगाती है''।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड एक कृषि प्रधान राज्य है जहाँ लगभग 65 प्रतिशत आबादी आजीविका संवर्धन हेतु कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों पर आश्रित है। यद्यपि राज्य में केन्द्र व राज्य सरकार के कृषि विकास सम्बन्धी अनेक योजनाओं के संचालन एवं नवीनतम कृषि तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है। परन्तु आने वाले वर्शों में जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि एवं कृषि योग्य खेती का रकबा लगातार कम होने के कारण पर्याप्त खाद्यान्न आपूर्ति सुनिश्चित करना निरन्तर चुनौती बनी रहती है। इस परिप्रेक्ष्य में क्षेत्र विशेष के सापेक्ष खेती का सही आकलन कर इसमें उचित नियोजन करने की आवश्यकता है। ताकि उन्नत कृषि तकनीकी एवं गुणवत्तापूर्ण निवेशों को किसानों के द्वार तक ससमय पहुँचाकर कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सके। इसी के दृश्टिगत राज्य के विभिन्न जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न जनपदों के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के कृषकों तक कृषि की नवीनतम तकनीकों को पहुँचाने हेतु कृषि प्रसार के विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। यहाँ मैं यह भी कहूँगा कि रेखीय विभागों द्वारा केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी देने में महत्ती भूमिका निभायी जाती है, जो कृषकों हेतु लाभकारी साबित होता है। मैं कृषकों से भी अपील करूँगा कि वे अपने क्षेत्र की आवश्यकतानुरूप उन्नत तकनीक अपना कर स्वरोजगार सृजन करें। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' में वैज्ञानिकों द्वारा संचालित प्रसार गतिविधियों के साथ–साथ कृषकोपयोगी तकनीकों, सफलता की कहानियों एवं आगामी त्रैमास के सम–सामयिक कृषि कार्यों का भी समावेश किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि प्रसार से जुड़े कर्मियों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका के सम्पादन हेतु मैं डा. बी.डी. सिंह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) को बधाई देता हूँ।

(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

वर्तमान में हमारे देश की जनसंख्या 140 करोड़ पार कर चुकी है तथापि नीति नियंताओं, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से आज हमारे पास इतनी बड़ी जनसंख्या हेतु पर्याप्त भोजन उपलब्ध है। उत्तराखण्ड की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण कृषि में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पायी है। इस चुनौती को मद्देनजर रखते हुए पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, कृषकों के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने एवं उनके आर्थिक उन्नयन हेतु निरन्तर प्रयासरत हैं। कृषकों तक तकनीकी के हस्तान्तरण में कृषि पत्रिकाओं का भी अहम भूमिका है। पंतनगर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' वर्ष 2025 का चतुर्थ अंक आपके हाथों में है, जिसके माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं मुख्यालय द्वारा अक्टूबर से दिसम्बर, 2025 की अवधि में संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ–साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले कृषि कार्यों की जानकारी भी समाहित की गयी है। मुझे विश्वास है कि यह कृषक समुदाय एवं कृषि प्रसार से जुड़े कर्मियों हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। मैं निदेशक प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों/वैज्ञानिकों एवं मुख्यालय के सभी वैज्ञानिकों/कर्मियों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से इस पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन संभव हो पा रहा है। पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझावों के आकांक्षी हैं। आप अपने सुझाव अधोलिखित पते, फोन नम्बर अथवा मेल–आई.डी. पर प्रेशित कर सकते हैं।

(डा० बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944–233336, 233811, ई–मेल : direxternedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944–234810
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)